आदाबे ज़िन्दगी

तरतीब

हज़रत मौलाना गुलाम जीलानी मिस्वाही

नाशिर–
गौसिाया कमेटी
अजीता पुर जिला जालौन यू ,पी

नाम किताब –आदाबे ज़िन्दगी

मुरत्तिब- हज़रत अल्हाज़ मौलाना गुलाम जीलानी मिस्वाही उस्ताज़ जामिया समदिया फफ़ून्द शरीफ

हसबे हुक्म– खतीबे खानबादा चिश्तीया हज़रत शाह सैय्यद मज़हर मियां साहब आस्ताना आलिया फफ़ून्द शरीफ

तकरीब – हज़रत मुफती मोहम्मद साज़िद रज़ा मिस्बाही

पुरुफ रीडिगं – हज़रत मौलाना अमीरुल हसन चिश्ती

कम्पोज़र – यावर वारशी कानपुर

कीमत – फि सबील्लिाह

नाशिर – अराकीन गौशिया कमेटी अजीता पुर जालौन

मिलने के पते

- ❖ अराकीन गौशिया कमेटी अजीता पुर जालौन
- ❖ मक्तबा समदिया जामा मस्जिद फफ़ून्द शरीफ
- ❖ ख्वाज़ा बुक डिपो मटिया महल जामा मस्जिद दिल्ली
- ❖ मदरसा हनफिया गौशिया पारु, मुज़फ़्फर पुर

फ़ेहरिस्त

1	अर्ज़े नाशिर	6
2	इब्तिदाइया	9
3	तक़रीब	11
4	खाने के आदाब व मसाइल	13
5	खाने के आदाब व सुनन	14
6	पानी पीने के आदाब	16
7	पानी पीने के आदाब व मसाइल	17
8	ज़ेब व ज़ीनत के अहकाम व मसाइल	18
9	फ़ैशन परस्ती का हौलनाक अन्जाम	21
10	ज़ेब व ज़ीनत के मसाइल	22
11	नाखुन और बाल के आदाब व मसाइल	25
12	तंगी–ए–रिज़्क़ का सबब	27
13	हाथों के नाखुन तराशने का तरीक़ा	27
14	पाँव के नाखुन काटने का तरीक़ा	28
15	नेल पालिश लगाना गुनाह है	28
16	नाम रखने के आदाब व मसाइल	30
17	सलाम, मुसाफ़हा और मुआनक़ा के आदाब व मसाइल	34
18	सोने जागने के आदाब व मसाइल	38
19	सोने और जागने की दुआ¡,	40

20	सोते वक़्त मऊज़तैन पढ़ना	40
21	जागने के वक़्त वज़ू करना	41
22	आदाब व मसाइल	41
23	बैठने और चलने के आदाब	42
24	तकिया पेश करने पर मग़फ़िरत की बशारत	44
25	लोगों को फलाँग कर आगे बैठना	44
26	इतराकर चलना	46
27	अकड़कर चलना	46
28	सरकार सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के चलने की अदा	46
29	बैठने और चलने के आदाब व मसाइल	47
30	छींक और जमाही का बयान	47
31	छींक से मुताल्लिक एक अहम वाक़आ	51

अर्ज़े नाशिर

क़स्बा अजीतापुर ज़िला जालौन का एक ज़रख़ेज़ ख़ित्ता है, जहाँ अहले सुन्नत व जमाअत के मोतक़ेदात के हामिलीन की एक बड़ी तादाद आबाद है, इस क़स्बे की ख़ुसूसियत यह है कि यहाँ के मुसलमान दीनी व मज़हबी मुआमलात में बड़े बेदार और जाँनिसार वाक़ेअ हुए हैं और अपने बुर्ज़ुगों के साथ उनकी वाबस्तगी बड़ी गहरी और मज़बूत है । यही वजह है कि यहाँ दीनी व मज़हबी तक़रीबात का इनइक़ाद निहायत तुज़्क व एहतिशाम के साथ होता है । आज से पच्चीस साल क़ब्ल मेमारे क़ौम व मिल्लत पीरे तरीक़त हज़रत अल्लामा शाह सैयद असग़र मिया साहब क़िबला रहमतुल्लाह अलैह आस्ताना–ए–आलिया समदिया फफूँद शरीफ़ ने एक कमेटी बनाम ग़ौसिया कमेटी क़ायम फ़रमाई और अपनी हयाते मुबारका तक इसकी सरपरस्ती फ़रमाते रहे । आपकी क़यादत व सरपरस्ती में इस कमेटी के ज़रिया दीनी व इसलाही मजालिस और मुख़तलिफ़ मवाक़े पर दीनी महाफ़िल का इनइक़ाद होता रहा । आपके विसाल के बाद भी आपके रूहानी फ़ुयूज़ व बरकात से यह सिलसिला जारी व सारी है । माहे मुहर्रमुल हराम में इस कमेटी के

ज़ेरे एहतेमाम ''ज़िक्रे शोहदा–ए–कर्बला व जश्ने ग़ौसुल वरा'' का एहतेमाम पच्चीस सालों से पाबन्दी के साथ होता आ रहा है । पच्चीसवीं ज़िक्रे शोहदा–ए– कर्बला व जश्ने ग़ौसुल वरा के मौक़े पर मख़दूमे गिरामी मरतबत ख़तीबे ख़ानवादा–ए–चिश्तिया, शैख़े तरीक़त हज़रत अल्लामा शाह सैयद मुहम्मद मज़हर मियाँ साहब क़िबला दाम ज़िल्लहुल आली आस्ताना–ए–आलिया समदिया मिस्बाहिया फफूँद शरीफ़ ने कमेटी के अराकीन को मशवरा दिया कि इस पच्चीसवें जश्न के मौक़े पर एक ऐसे रिसाले की इशाअत भी अमल में आनी चाहिए, जिसके ज़रिया मुस्लिम मुआशरेके अफ़राद को रोज़मर्रा पेश आने वाले मुआमलात के अहकाम व आदाब से वाक़फ़ियत हो । हज़रत का यह मुख़लिसाना मशवरा यक़ीनन मुफ़ीद और बहुत ही अहम था । आपने मज़ीद करम फ़रमाकर एक निहायत क़ीमती और नफ़अ बख़्श रिसाला जामिआ समदिया के उस्ताज़ हज़रत अल्लामा अलहाज ग़ुलाम जीलानी मिस्बाही से मुरत्तब कराया । इस करम फ़रमाई पर हम जुमला अराकीन ग़ौसिया कमेटी अजीतापुर हज़रत के एहसानमन्द और शुक्र गुज़ार हैं और उम्मीद करते हैं हज़रत आइन्दा भी अपने मुफ़ीद और क़ीमती मशवरों के ज़रिया हमारी रहनुमाई फ़रमाते रहेंगे ।

****शाहां चे अजब गर ब नवाज़न्द गदारा****

इस पच्चीसवीं जश्न के मौक़े पर हम जुमला अराकीने ग़ौसिया कमेटी बानी–ए–इजलास पीरे तरीक़त हज़रत अल्लामा शाह सैयद असग़र मियाँ साहब क़िबला रहमतुल्लाह अलैह आस्ताना–ए– आलिया समदिया फफूँद शरीफ़ की ख़िदमत में ग़ुलामाना और ख़ादिमाना ख़िराजे अक़ीदत व मुहब्बत पेश करते हैं । अल्लाह तआला हमारी इस कमेटी के ज़रिया दीन की वह ख़िदमत ले जिससे वह और उसका हबीब राज़ी हो । दुआ है कि अल्लाह पाक अपने हबीब के सदक़े में पीरे तरीक़त हुज़ूर सैयद मज़हर मियाँ साहब क़िबला का साया–ए–करम हम अराकीन पर ता देर क़ायम रक्खे । आमीन बजाहे हबीबिहिल करीम व अला आलिही व सहबिही अजमईन ।

मिनजानिब

जुमला अराकीन

ग़ौसिया कमेटी

अजीतापुर, ज़िला जालौन (यू0पी0

इब्तिदाइया

मख़दूमिल करीम, गुले गुलज़ारे फ़ातमियत, ख़तीबे ख़ानवादा–ए–चिश्तिया, पीरे तरीक़त हज़रत अल्लामा अलहाज शाह सैयद मुहम्मद मज़हर मियाँ साहब क़िबला आस्ताना–ए–आलिया समदिया मिस्बाहिया फफूँद शरीफ़ ने नाचीज़ को ग़ौसिया कमेटी अजीतापुर ज़िला जालौन के पच्चीसवीं ज़िक्रे शोहदा–ए–कर्बला व जश्ने ग़ौसुल वरा के मौक़े पर एक ऐसे रिसाले की तरतीब का हुक्म दिया जिसमें मुसलमानों के मुआशरती ज़िन्दगी में पेश आने वाले मुआमलात के आदाब व मसाइल का ज़िक्र आसान और सादा तरीक़े पर हो, जिससे समाज का हर फ़र्द फ़ायदा हासिल कर सके । हज़रत के हुक्म की तामील मेरे लिए लाज़िम व वाजिब थी और सआदत मन्दी भी । मैने मुख़्तसर से वक़्त में इस रिसाले को मुरत्तब किया है, जिसमें खाने पीने, सोने जागने, चलने फिरने, उठने बैठने, सलाम, मुसाफ़हा मुआनक़ा, ज़ेब व ज़ीनत, नाम रखने और छींक जमाही वग़ैरह के अहकाम व आदाब बयान किए गए हैं ।

इस मुख़्तसर रिसाले में ज़िक्र किए गए अहकाम व

मसाइल, अहादीसे नबविया और फ़िक़्ह हनफ़ी की मोतबर व मुस्तनद किताबों से अख़ज़ किए गए हैं । मसलन बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़, तिरमिज़ी शरीफ़, अबूदाऊद वग़ैरह और आलमगीरी फ़तावा रज़विया, बहारे शरीअत वग़ैरह ।

यह रिसाला हिन्दी और उर्दू दोनों ज़बानों में शाए हो रहा है, जो वक़्त की एक अहम ज़रूरत है, इसका एक ख़ास फ़ायदा यह होगा कि ग़ैर उर्दू दाँ तबक़ा भी इसे पढ़कर अपनी इस्लाह कर सकता है । मख़दूमिल करीम हज़रत शाह सैयद मज़हर मियाँ साहब क़िबला दाम ज़िल्लहू की इस बन्दा नवाज़ी पर बेपनाह शुक्रगुज़ार हूँ कि मुझे ख़िदमत के लायक़ समझाा ।

गुलाम जीलानी मिस्बाही
उस्ताज़ जामिआ समदिया फफूँद शरीफ+

तक़रीब

इस्लाम एक जामेअ दस्तूरे हयात है,जिसमें इंसानी ज़िन्दगी के हर मुहाज़ के लिए वाज़ेह दफ़आत मौजूद हैं, अक़ीदा व ईमान से लेकर मामूलाते ज़िन्दगी मसलन खाने पीने, उठने बैठने, सोने जागने, ओढ़ने पहनने, मिलने जुलने और दीगर मुआशरती मुआमलात के अहकाम वाज़ेह तौर पर बयान कर दिए गए हैं। यह भी एक हक़ीक़त है कि मुसलमान की ज़िन्दगी का सबसे बेहतर नमूना वजहे तख़लीक़े कायनात फ़ख़्रे मौजूदात सरवरे दोआलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की हयाते मुबारका है । आपकी हयाते मुबारका को मिशअले राह बनाकर एक मुसलमान दुनिया व आख़िरत की बरकतें व सआदतें हासिल करने के साथ मुआशरती तौर पर भी कामयाब ज़िन्दगी गुज़ार सकता है । सीरते रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम और आपके फ़रामीन व इरशादात मुसलमानों की हर मोड़ पर रहनुमाई करते नज़र आते हैं लेकिन आज का मुसलमान न तो अपने आक़ा सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की सीरत से वाक़िफ़ है और न इस्लामी अख़लाक़ व आदाब से आागह है, उनका मतमहे नज़र मग़रिबी तहज़ीब है जिसकी चकाचौंध में गुम होकर इसलामी तहज़ीब व

सक़ाफ़त से दूर होता जा रहा है । ऐसे हालात में इसलाम के दायी व मुबल्लिग़ीन और उलमा व वाइज़ीन की यह मनसबी ज़िम्मेदारी होती है कि क़ौम तक ज़िन्दगी के इसलामी उसूल व आदाब को पहुँचाएं । इसलामी तहज़ीब व सक़ाफ़त की तरवीज व इशाअत के लिए मुआशरे के नौजवानों को बर अंगेख़ता करें और उन्हें एहसास दिलाएं कि हमारी कामयाबी इसी में है कि हम एक कामिल मुसलमान की सूरत में अपनी ज़िन्दगी गुज़ारें ।

मसर्रत की बात है कि मुहिब्बे गिरामी हज़रत अल्लामा अलहाज ग़ुलाम जीलानी मिस्बाही, उस्ताज़ जामिआ समदिया फफूँद शरीफ़ ने इस ज़रूरत को महसूस किया और अपने रिसाले में इसलामी आदाबे ज़िन्दगी के मुख़तलिफ़ गोशों पर रोशनी डाली जो यक़ीनन फ़ायदा बख़्श और कारआमद है, ख़ास बात यह है कि रिसाला हिन्दी और उर्दू दोनों ज़बानों में शाए हो रहा है, जिससे दोनों ज़बानों से वाक़फ़ियत रखने वाले अफ़राद मुस्तफ़ीद होंगे । अल्लाह तआला मुरत्तिब की इस ख़िदमत को क़ुबूल फ़रमाए । आमीन बजाहे हबीबिहिल करीम व अला आलिही व सहबिही अजमईन ।

मुहम्मद साजिद रज़ा मिस्बाही

उस्ताज़ जामिआ समदिया, फफूँद शरीफ+

खाने के आदाब व मसाइल

हदीस :रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया जिस खाने पर बिस्मिल्लाह न पढ़ी जाए, शैतान के लिए वह खाना हलाल हो जाता है, यानी बिस्मिल्लाह न पढ़ने की सूरत में शैतान उस खाने में शरीक हो जाता है । (मुस्मिल शरीफ)

हदीस : दैलमी ने अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया जब खाये या पिये तो यह कह ले बिसिमल्लाहि व बिल्लज़ी ला यदुर्रू मअ इसमुहू शैइन फ़िल अर्दी वला फ़िस्समाइ या हैय्यु या क़य्यूम (अल्लाह के नाम से और अल्लाह की मदद से, जिसके नाम के साथ कोई चीज़ ज़रर देने वाली नहीं, न ज़मीन में न आसमान में, ऐ हैय्यु ऐ क़य्यूम) फिर उससे कोई बीमारी न होगी । अगरचे उसमें ज़हर हो ।

हदीस : नबी करीम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया दाहिने हाथ से खाये और दाहिने हाथ से पिये और दाहिने हाथ से ले और दाहिने हाथ से दे क्योंकि शैतान बाएं हाथ से खाता है, बायीं हाथ से पीता है और बायीं हाथ से लेता है और बायीं हाथ से देता है । (इब्ने

माजा)

हदीस : उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम मकान में तशरीफ़ लाए, रोटी का टुकड़ा पड़ा हुआ देखा, उसको लेकर पोछा फिर खा लिया और फ़रमाया ऐ आयशा अच्छी चीज़ का एहतेराम करो कि यह चीज़ यानी रोटी जिस किसी क़ौम से भागी है तो लौट कर नहीं आई । (इब्ने माजा)

हदीस : हजरत अबु हुरेरा रजियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है फरमाते है क `नबीय करीम सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खाने को कभी एब नही लगाया यानी बुरा नही कहा अगर ख्वाहिस हुई तो खा लिया वरना छोड़ दिया।

खाने के आदाब व सुनन

- खाने से पहले और बाद में दोनों हाथ गट्टों तक धोये जाएं, खाने से पहले हाथ धोकर पोंछे न जाएं, और खाने के बाद हाथ धोकर रूमाल या तौलिया से पोंछ लें कि खाने का असर बाक़ी न रहे ।
- खाने से क़ब्ल जवानों के हाथ पहले धुलाये जाएं और खाने के बाद बूढ़ों के हाथ धुलाये जाएं इसके बाद जवानों के।
- दस्तरख़्वान बिछाकर खाया जाए, अलबत्ता ऐसे दस्तरख़्वान से परहेज़ करे जिन पर उर्दू में अशआर

वग़ैरह या जानदार की तस्वीर वग़ैरह हों ।

- दस्तरख़्वान पर रोटी बाद में लाए और जब रोटी आ जाए तो खाना शुरू कर दे, सालन का इन्तिज़ार न करे ।
- खाना बिस्मिल्लाह पढ़कर शुरू किया जाए और ख़त्म करके अल्हम्दु लिल्लाह पढ़ें, अगर बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल गया है तो जब याद आ जाए यह कहे, बिस्मिल्लाहि फ़ी अव्वलहू व आख़िरहू ।
- रोटी का किनारा बिला वजह तोड़कर डाल देना और बीच की खा लेना इसराफ़ है, सख़्ती के साथ इससे परहेज़ करे, रोटी के हर हिस्से का एहतेराम करें ।
- दाहिने हाथ से खाना खाए, और हाथ से लुक़्मा छूट कर दस्तर ख़्वान पर गिर गया तो उसे छोड़ देना इसराफ़ है बल्कि पहले उसको उठाकर खाये ।
- खाने के वक़्त बायाँ पाँव बिछा दे और दाहिना खड़ा रक्खे या सुरीन पर बैठे और दोनों घुटने खड़े रक्खे । (बहारे शरीअत)
- खाने की इब्तिदा नमक से की जाए और ख़त्म भी उसी पर करें, इससे सत्तर बीमारियां दूर हो जाती हैं, अगर मीठा वग़ैरह हो तो उसे बीच में खा लें ।

- खाने के बाद ख़िलाल करने में कोई हर्ज नहीं, ख़िलाल के लिए नीम की सींक बहुत बेहतर है कि इसकी तलख़ी से मुँह की सफ़ाई होती है और यह मसूढ़ों के लिए भी मुफ़ीद है ।

पानी पीने के आदाब

हदीस : हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम पानी पीने में तीन बार सांस लेते थे, और फ़रमाया कि इस तरह पानी पीने में ज़्यादा सैराबी होती है और सेहत के लिए मुफ़ीद और ख़ुश गवार है । (मुस्मिल शरीफ)

हदीस : नबी करीम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया कि एक सांस में पानी न पियो जैसे ऊँट पीता है बल्कि दो और तीन मर्तबा में पियो और जब पियो तो बिस्मिल्लाह कह लो और जब बर्तन को मुँह से हटाओ तो अल्लाह की हम्द करो । (तिरमिज़ी)

हदीस : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया खड़े होकर हरगिज़ कोई शख़्स पानी न पिये और जो भूल कर ऐसा कर गुज़रे वह क़ै कर दे । (मुस्लिम शरीफ)

हदीस : हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने

पियाले में जो जगह टूटी है वहाँ से पीने की और पीने की चीज़ में फूँकने की मुमानिअत फ़रमाई है । (अबूदाऊद)

हदीस : हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया कि पानी को चूस कर पियो कि यह ख़ुश गवार और ज़ूद हज़्म है और बीमारी से बचाव है ।

पानी पीने के आदाब व मसाइल

- पानी बिस्मिल्लाह कहकर दाहिने हाथ से पिये और तीन सांस में पिये , हर मर्तबा बर्तन को मुँह से हटाकर सांस ले, पहली और दूसरी मर्तबा एक एक घूँट पिये और तीसरी सांस में जितना चाहे पी डाले, इस तरह पीने से प्यास बुझ जाती है और पानी को चूस कर पिये, ग़ट–ग़ट बड़े–बड़े घूँट न पिये, जब पी चुके तो अल्हम्दु लिल्लाह कहे, इस ज़माने में बाज़ लोग बाएं हाथ में कटोरा या गिलास लेकर पानी पीते है ख़ुसूसन खाने के वक़्त दाहिने हाथ से पीने को ख़िलाफ़े तहज़ीब समझते हैं, उनकी यह तहज़ीब तहज़ीबे नसारा है, इसलामी तहज़ीब दाहिने हाथ से पीना है। (बहारे शरीअत)
- मशक के दहाने में मुँह लगाकर पानी पीना मकरूह है, क्या मालूम कोई मुज़िर चीज़ उसके हल्क़ में चली जाए, इसी तरह लोटे की टोंटी से पानी पीना, मगर

जबकि लोटे को देख लिया हो कि उसमें कोई चीज़ नहीं है ।

- जाड़ों में अकसर जगह मस्जिद में सक़ाया में पानी गर्म किया जाता है ताकि मस्जिद में जो नमाज़ी आएं उससे वज़ू व ग़ुस्ल करें, यह पानी भी वहीं इस्तेमाल किया जा सकता है घर ले जाने की इजाज़त नहीं, इसी तरह मस्जिद के लोटों को भी वहीं इस्तेमाल कर सकते हैं घर नहीं ले जा सकते, बाज़ लोग ताज़ा पानी भर कर मसिजद के लोटों में घर ले जाते हैं यह भी नाजायज़ है ।
- वज़ू का पानी और आबे ज़मज़म को खड़े होकर पिया जाए बाक़ी दूसरे पानी को बैठकर क्योंकि यह दोनो पानी बरकत वाले हैं और जब पानी खड़े होकर पिया जाता है तो वह तमाम आज़ा में फ़ौरन सरायत कर जाता है और इन दोनो पानियों से मक़सूद वही तबर्रूक है, लिहाज़ा इनका तमाम आज़ा में पहुँच जाना फ़ायदे मन्द है ।

ज़ेब व ज़ीनत के अहकाम व मसाइल

हदीस : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया, जिसके बाल हों उनका इकराम करे, यानी उनको

धोये, तेल लगाये, कंघा करे । (अबू दाऊद)

हदीस : हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि हिन्द बिन्त अतबा ने अर्ज़ की : या नबी अल्लाह मुझे बैअत कर लीजिए, फ़रमायाः मैं तुझे बैअत न करूँगा, जब तक तू अपनी हथेलियों को न बदल दे (यानी मेहंदी लगाकर इनका रंग न बदल दे) तेरे हाथ गोया दरिन्दे के हाथ मालूम हो रहे हैं, यानी औरतों को चाहिए कि हाथों को मेहंदी से रंग लिया करें । (अबू दाऊद)

हदीस : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के पास एक मुख़न्नस लाया गया जिसने अपने हाथ और पाँव मेंहदी से रंगे थे । इरशाद फ़रमाया इसका क्या हाल है (यानी इसने मेंहदी क्यों लगाई है) लोगों ने अर्ज़ किया कि यह औरतों की नक़्ल करता है । हुज़ूर ने हुक्म फ़रमाया कि इसे शह्‌र बदर कर दो, लिहाज़ा उसे शहर बदर कर दिया गया, मदीना मुनव्वरा से निकालकर नक़ीअ भेज दिया गया। (अबू दाऊद)

हदीस : इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अनहुमा से रिवायत है कि मोमिन का ख़िज़ाब ज़र्दी है, और मुस्लिम का ख़िज़ाब सुर्ख़ी है और काफ़िर का ख़िज़ाब सियाही है । (तिबरानी) नीज़ एक दूसरी हदीस में है कि सबसे पहले मेंहदी का ख़िज़ाब इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने किया और

सबसे पहले सियाह ख़िज़ाब फ़िरऔन ने किया ।

हदीस : सहीह बुख़ारी व मुस्लिम में अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी, उन्होंने फ़रमाया कि अल्लाह की लानत गोदने वालियों और गुदवाने वालियों पर और बाल नोचने वालियों पर, यानी जो औरत भौं के बाल नोचकर अबरू को ख़ूबसूरत बनाती है उस पर लानत है, और ख़ूबसूरती के लिए दाँत रेतने वालियों पर यानी जो औरतें दांतों को रेतकर ख़ूबसूरत बनाती हैं और अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ को बदल डालती हैं, एक औरत ने अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास हाज़िर होकर यह कहा कि मुझे ख़बर मिली है कि आपने फ़लाँ फ़लाँ क़िस्म की औरतों पर लानत की है, उन्होंने फ़रमाया कि मैं क्यों न लानत करूँ उनपर जिन पर रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने लानत की, और उस पर जो किताबुल्लाह में (मलऊन) है, उस औरत ने कहा कि मैंने किताबुल्लाह पढ़ी है मुझे तो उसमें यह चीज़ नहीं मिली, फ़रमाया तूने ग़ौर से पढ़ा होता तो ज़रूर इसको पाया होता, क्या तूने यह नहीं पढ़ा, "मा अताकुमुर्रसूला फ़ ख़ुज़ूह वमा नहाकुम अन्हु फ़नतहू" यानी रसूल तुम्हें जो कुछ दें उसे लो और जिस चीज़ से मना कर दें उससे बाज़ आ जाओ । उस औरत ने कहा : हाँ यह पढ़ा है। अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने फ़रमाया कि

हुज़ूर ने इससे मना फ़रमाया । एक रिवायत में है कि उसके बाद उस औरत ने यह कहा उनमें की बाज़ बातें तो आपकी बीवी में भी हैं, अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने फ़रमाया अन्दर जाकर देखो, वह मकान में गई, फिर आई.. .....तो आपने फ़रमाया, क्या देखा, उसने कहा, कुछ नहीं देखा, अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने फ़रमाया अगर उसमें यह बात होती तो मेरे साथ नहीं रहती, यानी ऐसी औरत मेरे घर में नहीं रह सकती ।

मज़कूरा हदीसे पाक से हमारी वह माँ बहनें इबरत हासिल करें जो ब्यूटी पार्लर जाकर भौं के बाल उखड़वाती हैं और न जाने कितने नाजायज़ कामों को करती कराती हैं । अल्लाह तआला हमारी माँ बहनों को हिदायत दे, आज जिस तरह नाजायज़ फ़ैशन परस्ती मुस्लिम मुआशरे में रायज हो गई है उसे देखने के बाद रोंगटे खड़े हो जाते हैं ।

फ़ैशन परस्ती का हौलनाक अन्जाम

नबी आख़िरूज़्ज़माँ सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशाद है कि मैंने कुछ लोग ऐसे देखे जिनकी ज़बानें आग की क़ैचियों से काटी जा रही थीं । मैंने पूछा कि यह कौन लोग हैं तो मुझे बताया गया कि यह वह लोग हैं जो नाजायज़ चीज़ों से ज़ीनत हासिल करते थे, नीज़ एक

गढ़ा भी मुलाहिज़ा किया जिससे चीख़ व पुकार की आवाज़ें आ रही थीं, मेरे दरयाफ़्त करने पर बताया गया कि यह वह औरतें हैं जो नाजायज़ चीज़ों के ज़रिये ज़ीनत किया करती थीं । (शरहुस्सुदूर)

आज आम तौर से देखने को मिलता है कि औरतें ज़ेब व ज़ीनत करने में हलाल व हराम की तमीज़ नहीं करतीं, अपनी ज़ीनत में इज़ाफ़ा के लिए हराम चीज़ों के इस्तेमाल में उन्हें कोई तअम्मुल नहीं होता, ऐसी औरतें मज़कूरा हदीसे पाक की रोशनी में सख़्त अज़ाब की मुस्तहक़ हैं ।

सरकारे दोआलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने लानत फ़रमाई उन ज़नाना मर्दों पर जो औरतों की सूरत बनायें और उन मर्दानी औरतों पर जो मर्दों की सूरत बनायें।

आज हमारे मुआशरे की औरतें मर्दानी शक्ल व सूरत इख़्तियार करने लगी हैं, मर्दों का लिबास औरतें पहनने लगी हैं, आज आम तौर पर लड़कियों का पसन्दीदा लिबास टी शर्ट, जीन्स, पैन्ट वग़ैरह हो चुका है, जो मर्दों के लिए वज़अ किया गया है, इन लिबासों से जहाँ औरतों का पर्दा नहीं हो पाता वहीं बेहयाई को भी फ़रोग़ मिलता है।

ज़ेब व ज़ीनत के मसाइल

- इंसान के बालों की चोटी बनाकर औरत अपने बालों

में गूंधे यह हराम है । हदीसे पाक में इस पर लानत आई है।

● ऊन या सियाह धागे की चोटी औरतों को सर में लगाना जायज़ है ।

● लड़कियों के कान छेदना जायज़ है और बाज़ लाग लड़कों के भी कान छिदवाते हैं और बाली वग़ैरह पहनाते हैं यह नाजायज़ है, यूँही मर्दों को हाथ में कड़ा या ज़ंजीर वग़ैरह पहनना नाजायज़ है ।

● औरतों को हाथ पाँव में मेहन्दी लगाना जायज़ है, बिला ज़रूरत छोटे बच्चों के हाथ में मेहन्दी लगाना न चाहिए लड़कियों के हाथ पाँव में लगा सकते हैं, जिस तरह उनको ज़ेवर पहना सकते हैं, मर्दों के लिए हाथ पाँव में मेहन्दी लगाना नाजायज़ है अगरचे शादी का मौक़ा ही क्यों न हो ।

● लड़कों को सोने चाँदी के ज़ेवर पहनना हराम है और जिसने पहना वह गुनाहगार होगा । मर्द को ज़ेवर पहनना मुतलक़न हराम है । सिर्फ़ चाँदी की एक अंगूठी जायज़ है जो वज़्न में एक मिस्क़ाल यानी साढ़े चार माशा से कम हो और सोने की अंगूठी भी हराम है, ख़्वाह शादी का मौक़ा ही क्यों न हो ।

● अंगूठी सिर्फ़ चाँदी ही की पहनी जा सकती है दूसरी धात की अंगूठी पहनना हराम है, मसलन लोहा,

पीतल, तांबा, जस्त वग़ैरहा, इन धातों की अंगूठियाँ मर्द औरत दोनों के लिए नाजायज़ हैं, फ़र्क़ इतना है कि औरत सोना भी पहन सकती है और मर्द नहीं पहन सकता ।

● हदीसे पाक में है कि एक शख़्स हुज़ूर की ख़िदमत में पीतल की अंगूठी पहनकर हाज़िर हुए, फ़रमाया क्या बात है कि तुमसे बुत की बू आती है, उन्होंने वह अंगूठी फेंक दी, फिर दूसरे दिन लोहे की अंगूठी पहनकर हाज़िर हुए, फ़रमाया : क्या बात है कि तुम पर जहन्नमियों का ज़ेवर देखता हूँ, उन्होंने उसको भी उतार दिया और अर्ज़ की : या रसूलल्लाह किस चीज़ की अंगूठी बनाऊँ ? फ़रमाया कि चाँदी की और उसको एक मिस्क़ाल पूरा न करना । (दुर्रे मुख़्तार)

● औरतों को चाँदी और सोने के ज़ेवरात पहनना जायज़ हैं, इसके अलावा लोहा, पीतल, ताँबा, जस्त वग़ैरह के ज़ेवरात इस्तेमाल करना नाजायज़ हैं ।

● हाथ और पाँव के नाख़ुन पर नेल पालिश लगाना मर्द और औरत दोनों के लिए ममनूअ है, एक तो वह नापाक होता है दूसरे यह कि उसकी वजह से वज़ू व ग़ुस्ल नहीं होता ।

● जानदार की तस्वीर वाले लिबास हरगिज़ न पहना करें, न ही जानवरों या इंसानों की तसावीर वाले स्टीकर्ज़

अपने कपड़ों पर लगायें, न ही घरों में आवेज़ाँ करें ।

नाख़ुन और बाल के
आदाब व मसाइल

हदीस : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया : पाँच चीज़ें फ़ितरत से हैं, यानी अम्बियाए साबिक़ीन अलैहिमुस्सलाम की सुन्नत से हैं, ख़तना कराना और मूए ज़ेरे नाफ़ मूंडना और मूंछें कम करना और नाख़ुन तरशवाना और बग़ल के बाल उखेड़ना । (बुख़ारी व मुस्लिम)

हदीस : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया : जो मूए ज़ेरे नाफ़ को न मूंडे और नाख़ुन न तराशे और मूँछ न काटे वह हम में से नहीं । (मुस्लिम)

हदीस : हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मूँछें और नाख़ुन तरशवाना और बग़ल के बाल उखाड़ने और मूए ज़ेरे नाफ़ मूंडने में हमारे लिए यह वक़्त मुक़र्रर किया गया है कि चालीस दिन से ज़्यादा न छोड़ें, यानी चालीस दिन के अन्दर इन कामों को ज़रूर कर लें ।

हदीस : रसूलल्लाहु सल्ललाहु अलैह वसल्लम ने

फ़रमाया : सफ़ेद बाल न उखाड़ो क्योंकि वह मुस्लिम का नूर है..................जो शख़्स इसलाम में बूढ़ा हुआ, अल्लाह तआला उसकी वजह से उसके लिए नेकी लिखेगा और ख़ता मिटा देगा और दर्जा बुलन्द करेगा । (अबू दाऊद)

एक दूसरी रिवायत में है हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स क़स्दन सफ़ेद बाल उखाड़े गा क़यामत के दिन वह नेज़ा हो जाएगा जिससे उसको भोंका जाएगा ।

आज कल लोगों को सफ़ेद बाल रखने में शर्म आती है और अपने सरों से सफ़ेद बालों को कभी अपने हाथों से उखेड़ देते हैं और कभी हज्जाम से उखड़वाते हैं, जबकि हदीसे पाक में फ़रमाया गया कि जो सफ़ेद बाल उखाड़ेगा क़यामत के दिन वह सफ़ेद बाल उसके लिए नेज़ा हो जाएगा जिससे उसे तकलीफ़ पहुँचाई जाएगी । लिहाज़ा हमें हरगिज़ हरगिज़ सफ़ेद बालों को उखाड़ना नहीं चाहिए बल्कि एक रिवायत में आया है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जब सफ़ेद बाल देखा तो ख़ुदा की बारगाह में अर्ज़ किया ऐ रब यह क्या है................अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ इब्राहीम यह वक़ार है तो हज़रत इब्राहीम ने अर्ज़ किया : ऐ मेरे रब मेरा वकार ज़्यादा कर ।

तंगी-ए-रिज़्क़ का सबब

यूंही कुछ लोग लम्बे लम्बे नाख़ुन रखते हैं और मूँछों को बहुत ज़्यादा बढ़ाते हैं जबकि हदीसे पाक में फ़रमाया गया कि जो मूँछें न तराशे और नाख़ुन न काटे वह हम में से नहीं, यानी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ऐसे लोगों से बेज़ार हैं, लिहाज़ा हमें चाहिए कि चालीस दिन मुकम्मल होने से पहले हर हाल में अपने मूए ज़ेरे नाफ़, नाख़ुन और मूँछ को ज़रूर तराशें, नीज़ रिवायतों में आया है कि जो शख़्स नाख़ुन बढ़ाता है अल्लाह उसके रिज़्क़ में तंगी फ़रमाता है, फिर हम परेशान होते हैं कि बरकत नहीं होती, मुफ़लिसी और मोहताजी घेरे हुए है, काश हम अपने जिस्म और घर से इन तमाम चीज़ों को दूर कर दें जो अल्लाह की रहमतों व बरकतों को हम तक आने नहीं देतीं, फिर रब की रहमत व बरकत का आलम देखें ।

हाथों के नाख़ुन तराशने का तरीक़ा

हाथों के नाख़ुन तराशने के दो तरीक़े बयान किए जाते हैं, यहाँ पर उनमें से जो आसान तरीक़ा है उसे बयान किया जा रहा है, अगर आप इस तरीक़े पर नाख़ुन काटेंगे

तो सुन्नत का सवाब भी पायेंगे ।

दाहिने हाथ की कलमा की उंगली से शुरू करें और छुंगली पर ख़त्म करें, फिर बायें हाथ की छुगली से शुरू करके अंगूठे पर ख़त्म करें उसके बाद दाहिने हाथ के अंगूठे का नाखुन तराशें, इस सूरत में दाहिने हाथ से शुरू हुआ और दाहिने हाथ पर ख़त्म भी हुआ ।

पांव के नाखुन काटने का तरीक़ा

बहारे शरीअत में दुर्रे मुख़्तार के हवाले से मज़कूर है कि पाँव के नाख़ुन तराशने की कोई तरकीब मनकूल नहीं, बेहतर यह है कि वज़ू में पाँव की उंगलियों में ख़िलाल करने की जो तरतीब है उसी तरतीब के मुताबिक़ पाँव के नाख़ुन काट लें, यानी सीधे पाँव की छुंगली से शुरू करके तरतीब वार अंगूठे समेत नाख़ुन तराश लें, फिर उलटे पाँव के अंगूठे से शुरू करके छुंगली समेत नाख़ुन काट लें ।

नेल पालिश लगाना गुनाह है

आजकल मुसलमानों में नेल पालिश का रिवाज आम हो गया है, और बहुत कम औरतें एसी होंगी जो इस फ़ैशन से बचती होंगी, बल्कि बाज़ औक़ात तो मर्दों के नाख़ुन पर भी नेल पालिश देखने को मिल जाती है, जबकि नेल पालिश नापाक होती है, क्योंकि इसमें स्प्रिट

डाला जाता है, और स्प्रिट अज़ क़िस्म शराब है और शराब नापाक है, जब इसको नाख़ुन वग़ैरह पर लगाया जाता है तो इसकी तह जम जाती है, जिसकी वजह से इसके नीचे पानी नहीं पहुँचता, लिहाज़ा जिन नाख़ुनों पर पालिश लगी होती है, न उनका वज़ू होता है और न ही ग़ुस्ल । लिहाज़ा जब वज़ू व ग़ुस्ल नहीं होगा तो नमाज़ किस तरह होगी, और जिस घर में कोई जुम्बी यानी नापाक आदमी होता है उसमें रहमत के फ़रिश्ते भी दाख़िल नहीं होते ।

लिहाज़ा दीनी व ईमानी माँ बहनों से मुख़लिसाना गुज़ारिश है कि अपनी आख़िरत को तबाह व बर्बाद होने से बचायें और नेल पालिश से हमेशा के लिए तौबा कर लें ।

अब यहाँ नाख़ुन और हजामत वग़ैरह से मुताल्लिक़ कुछ ज़रूरी मसाइल ज़िक्र किये जाते हैं ।

- दांत से नाख़ुन न काटना चाहिए कि मकरूह है और इसमें मरज़े बर्स पैदा हो जाने का अन्देशा है । (आलमगीरी)
- चालीस दिन के अन्दर–अन्दर नाख़ुन तराश लेना चाहिए वरना सुन्नत भी छूटेगी और साथ ही साथ रिज़्क़ में भी तंगी आयेगी ।
- लम्बे नाख़ुन शैतान की नशिस्तगाह है यानी उन पर शैतान बैठता है (कीमिया–ए–सआदत)
- नाक के बाल न उखाड़ें कि इससे मरज़े आकला

पैदा हो जाने का ख़ौफ़ है ।

● दाढ़ी का ख़त बनवाना जायज़ है, मगर यह एहतियात रहे कि दाढ़ी एक मुट्ठी से छोटी न होने पाये क्योंकि दाढ़ी एक मुट्ठी से छोटी करना हराम है ।

● दाढ़ी बढ़ाना सुनने अम्बिया व मुरसिलीन से है, मुंडवाना या एक मुश्त से कम करना हराम है, हाँ एक मुश्त से ज़्यादा हो जाये तो जो एक मुश्त से ज़्यादा हो जाये तो उसको कटवा सकते हैं ।

● जनाबत की हालत में (यानी ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने की सूरत में) न कहीं के बाल मूंडें न ही नाखुन तराशें कि ऐसा करना मकरूह है । (आलमगीरी)

● सफ़ेद बालों को उखाड़ना या कैंची से चुनकर निकलवाना मकरूह है । (आलमगीरी)

हाँ मुजाहिदे इस्लाम अगर इस नियत से ऐसा करे कि कुफ़्फ़ार पर रोब तारी हो तो जायज़ है ।

नाम रखने के आदाब व मसाइल

हदीस : इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया, औलाद का वालिद पर यह हक़ है कि उसका अच्छा नाम रक्खे, और अच्छा अदब सिखाये । (बेहिक़ी)

हदीस : हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने जराद रज़ियल्लाहु

तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया : अपने भाइयों को उनके अच्छे नामों से पुकारो, बुरे अलक़ाब से न पुकारो ।

हदीस : हज़रत अबू दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन तुमको तुम्हारे नाम और तुम्हारे बापों के नाम से बुलाया जाएगा, लिहाज़ा अच्छे नाम रखो । (अबू दाऊद)

हदीस : हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसके लड़का पैदा हुआ और वह मेरी मुहब्बत और मेरे नाम की बरकत हासिल करने के लिए उसका नाम मुहम्मद रक्खे, वह और उसका लड़का दोनों बिहिश्त में जायेंगे । (इब्ने असाकर)

हदीस : सरकारे दोआलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं, रोज़े क़यामत दो शख़्स रब्बुल इज़्ज़त के हुज़ूर खड़े किए जाएंगे, हुक्म होगा इन्हें जन्नत में ले जाओ, अर्ज़ करेंगे इलाही, हम किस अमल पर जन्नत के क़ाबिल हुए, हमने तो जन्नत का कोई काम नहीं किया, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इरशाद फ़रमायेगा, जन्नत में जाओ, मैंने हलफ़ लिया है कि जिसका नाम अहमद या मुहम्मद हो दोज़ख़ में न जाएगा ।

आज मुस्लिम मुआशरे पर नज़र दौड़ायें तो पता चलेगा कि मुस्लिम नौजवानों के कैसे–कैसे नाम हैं, ऐसे ही मुस्लिम बच्चियों के नाम का भी बहुत बुरा हाल है, राजू, पप्पू, लड्डू, छिद्दू, जुम्मन, बन्टी, बब्ली, पिन्की, रिन्की वग़ैरह नाम सुनने को मिलते हैं, जिस तरह से आज मुस्लिम मुआशरे में इस्लामी नामों से बेज़ारी देखने को मिलती है उसे देखने के बाद अन्दाज़ा होता है कि मुसलमानों के अन्दर दीन और दीनदारी से कितना लगाव रह गया है ? जबकि सहीह रिवायतों में आया है कि अपने बच्चों के नाम सालिहीन के नामों पर रखो और अच्छे नाम रखा करो, क्योंकि जब बुर्ज़ुगों के नाम पर नाम रक्खें तो इंशा अल्लाह बच्चों के अन्दर बुर्ज़ुगों के नामों की बरकत ज़रूर शामिल होगी, और अहादीस के अन्दर अच्छे नाम रखने की बड़ी ताकीद आई है, बल्कि सरकारे दोआलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ऐसे नामों को जो अच्छे नहीं होते, उन्हें अच्छे नामों से बदल दिया करते थे, चुनान्चे हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हज़रत फ़ारूके़ आज़म की एक साहबज़ादी थीं जिनका नाम आसिया था रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने उनका नाम बदल कर जमीला रख दिया ।

इन्तिबाह

- जिनका नाम अब्दुल रहमान, अब्दुल ख़ालिक़, अब्दुल माबूद, अब्दुल कुद्दूस या अब्दुल क़य्यूम हो उसे रहमान, ख़ालिक़, माबूद, कुद्दूस, क़य्यूम कहना हराम है, इसलिए इनका इतलाक़ ग़ैरुल्लाह पर नाजायज़ है, हाँ अगर अब्दुल रहीम, अब्दुल करीम, अब्दुल अज़ीज़ क़िस्म का नाम हो तो रहीम, करीम और अज़ीज़ कह सकते हैं इस लिए कि इनका इतलाक़ ग़ैरुल्लाह पर जायज़ है ।
- अम्बिया–ए–किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम और औलिया–ए–इज़ाम रज़ियल्लाहु अन्हुम की बीवियों और लड़कियों नीज़ सहाबियात रज़ियल्लाहु तआला अन्हुन्ना का मुबारक संजीदा और पुरवक़ार नाम छोड़कर आज कल लोगों ने बाज़ारी औरतों के भड़कदार नाम पर अपनी लड़कियों का नाम रखना शुरू कर दिया जैसे नजमा, सुरैया, परवीन वग़ैरह ऐसा हरगिज़ न करना चाहिए ।
- मरा हुआ बच्चा पैदा हो तो उसका नाम रखने की हाजत नहीं, वग़ैर नाम रक्खे दफ़्न करें । (आलमगीरी)
- बच्चा पैदा होकर मर गया तो दफ़्न से पहले उसका नाम रक्खा जाए, लड़का हो तो लड़कों जैसा और लड़की हो तो लड़कियों जैसा नाम रक्खा जाए, और मालूम न हो सका कि लड़की है या लड़का तो ऐसा नाम रक्खा जाए जो मर्द व औरत दोनों के लिए हो सकता है । (बहारे शरीअत)

सलाम, मुसाफ़हा और मुआनक़ा के आदाब व मसाइल

हदीस : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दरयाफ़्त किया कि इस्लाम की कौन सी चीज़ सबसे अच्छी है, रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : खाना खिलाओ, और जिसे पहचानते हो और नहीं पहचानते हो सबको सलाम करो ।
(बुख़ारी व मुस्लिम)

हदीस : हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया : मुस्लिम के मुस्लिम पर छः हुक़ूक़ हैं । 1. जब उससे मिले तो सलाम करे । 2. और जब वह बुलाए तो इजाबत करे यानी हाज़िर हो । 3. और जब छींके तो जवाब दे । 4. और जब बीमार हो तो अयादत करे । 5. और जब मर जाए तो उसके जनाज़े के साथ जाए । 6. और जो चीज़ अपने लिए पसन्द करे, उसके लिए पसन्द करे ।

हदीस : सरकारे दोआलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स सलाम से पहले सवाल

करे उसे जवाब न दो ।

हदीस : हज़रत इमरान बिन हसीन रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक शख़्स नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आया और अस्सलामु अलैकुम कहा............हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे जवाब दिया, वह बैठ गया । हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया इसके लिए दस...............यानी दस नेकियाँ हैं, फिर दूसरा आया और उसने अस्सलामु अलेकुम व रहमतुल्लाह कहा हुजूर सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने जवाब दिया वह बैठ गया इरसाद फरमाया इसके लिए बीस फिर तीसरा शख़्स आया और अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहू कहा, उसको जवाब दिया और वह भी बैठ गया, हुज़ूर ने फ़रमाया इसके लिए तीस.............और मआज़ बिन अनस की रिवायत में है कि फिर एक शख़्स आया उसने कहा अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहू व मग़फ़िरतहू, हुज़ूर ने फ़रमाया इसके लिए चालीस और फ़ज़ायल इसी तरह के होते हैं, यानी जितना काम ज़्यादा होगा सवाब भी बढ़ता जाएगा । (तिरमिज़ी, अबूदाऊद)

हदीस : रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : आपस में मुसाफ़हा करो दिल की कपट जाती रहेगी, और बाहम हदया किया करो मुहब्बत पैदा होगी और अदावत निकल जाएगी ।

हदीस : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ हज़रत फ़ात्मा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर गया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु को दरयाफ़्त फ़रमाया कि वह यहाँ हैं, थोड़ी देर बाद वह दौड़ते हुए आए और हुज़ूर ने उन्हें गले लगा लिया और वह भी लिपट गए, फिर फ़रमाया : ऐ अल्लाह मैं इसे महबूब रखता हूँ तू भी इसे महबूब रख और उसे महबूब बना ले जो इसे महबूब रक्खे । (बुख़ारी व मुस्लिम)

आदाब व मसाईल

- मुसाफ़हा सुन्नत है और इसका सुबूत तवातुर से है और अहादीस में इसकी बड़ी फ़ज़ीलत आई है, एक हदीस में है कि जिसने अपने मुसलमान भाई से मुसाफ़हा किया और हाथ को हरकत दी, उसके तमाम गुनाह गिर जाएंगे, जितनी बार मुलाक़ात हो हर बार मुसाफ़हा करना सुन्नत है।
- सिर्फ़ उसी को सलाम न करे जिसको पहचानता हो बल्कि हर मुसलमान को सलाम करे चाहे पहचानता हो या न पहचानता हो बल्कि सहाबा किराम इसी इरादे से बाज़ार जाते थे कि कसरत से लोग मिलेंगे और ज़्यादा

सलाम करने का मौक़ा मिलेगा ।

- सलाम का जवाब फ़ौरन देना वाजिब है, बिला उज़्र ताख़ीर की गुनाहगार हुआ, और यह गुनाह जवाब देने से दफ़अ न होगा बल्कि तौबा करनी होगी । (बहारे शरीअत)
- किसी से कह दिया कि फ़लाँ को मेरा सलाम कह देना और उसने कह दिया कि हाँ तुम्हारा सलाम कह दूंगा तो उसपर सलाम पहुँचाना वाजिब है और जब उसने सलाम पहुँचाया तो जवाब यूँ दे कि पहले उस पहुँचाने वाले को उसके बाद जिसको सलाम भेजा है, यानी यह कहे, व अलैका व अलैहिस्सलम । (आलमगीरी) इसी तरह हाजियों से लोग कह देते हैं कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के दरबार में मेरा सलाम अर्ज़ कर देना, यह सलाम पहुँचाना भी वाजिब है ।
- उंगली या हथेली से सलाम करना ममनूअ है, हदीस में फ़रमाया कि उंगलियों से सलाम करना यहूदियों का तरीक़ा है और हथेलियों से इशारा करना नसारा का । (बहारे शरीअत)
- यूंही बाज़ लोग सलाम के जवाब में हाथ या सर से इशारा कर देते हैं बल्कि बाज़ सिर्फ़ आंखों के इशारे से जवाब देते हैं, यूँ जवाब नहीं हुआ उनको मुँह से जवाब देना वाजिब है ।
- अक्सर जगह देखा जाता है कि छोटा जब बड़े को

सलाम करता है तो वह जवाब में कहता है, जीते रहो, यह सलाम का जवाब नहीं बल्कि जवाब में व अलैकुमुस्सलाम कहा जाए । दोनों हाथों से मुसाफ़हा करें ।

- आजकल दोनों तरफ़ से एक–एक हाथ मिलाया जाता है, बल्कि सिर्फ़ उंगलियाँ ही आपस में टकड़ देते हैं यह सब ख़िलाफ़े सुन्नत है ।
- आलिमे बा अमल और बुर्ज़ुगों के हाथ चूमना जायज़ है ।
- औरतें आपस में मुलाक़ात के वक़्त एक दूसरे का हाथ पाँव मुँह और पेशानी न चूमें ।

सोने जागने के आदाब व मसाइल

नींद एक तरह की मौत है, जब सोने लगें तो हमें डरना चाहिए कि कहीं ऐसा न हो कि हमारी आंख ही न खुले, कहीं हमेशा–हमेशा के लिए ही सोते न रह जाएं, लिहाज़ा जब भी सोएं तो अपने गुनाहों पर नादिम और शर्मिन्दा होकर ख़ुदा की बारगाह में सच्चे दिल से तौबा करें, फिर जो सोने के आदाब हैं हमें उसी तरीक़े से सोना चाहिए, आने वाली सतरों में सोने के आदाब को अहादीसे करीमा की रोशनी में बयान किया जा रहा है, लिहाज़ा सोने के जो तरीक़े हमें बताये जा रहे हैं उन्हीं तरीक़ों पर

हमें सोना चाहिए और उन तरीक़ों पर सोने से बचें, जिनको अहादीसे करीमा में नापसन्द बताया गया है ।

हदीस : सरकारे दोआलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब अपनी ख़्वाबगाह में तशरीफ़ ले जाते तो अपना सीधा हाथ सीधे रूख़सार शरीफ़ के नीचे रखकर लेटते । (शमायल तिरमिज़ी)

हदीस : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम में से कोई बिस्तर पर लेटे तो अन्दर की तरफ़ चादर और बिस्तर को झाड़ ले क्योंकि नहीं जानता कि उसके नीचे क्या है । (इब्ने माजा)

हदीस : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने एक शख़्स को पेट के बल लेटे हुए देखा तो फ़रमाया इस तरह लेटने को अल्लाह पसन्द नहीं करता । (तिरमिज़ी)

हदीस : हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैं पेट के बल लेटा हुआ था, रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम मेरे पास से गुज़रे और पाँव से ठोकर मारी और फ़रमाया : ऐ जन्दब ! (यह हज़रत अबूज़र का नाम है) यह जहन्नमियों के लेटने का तरीक़ा है, यानी इस तरह काफ़िर लेटते हैं, या यह कि जहन्नुमी जहन्नुम में इस तरह लेटेंगे । (इब्ने माजा)

हदीस : हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने उस छत पर सोने से मना फ़रमाया जिस पर रोक न हो । (तिरमिज़ी)

हदीस : हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स अस्र के बाद सोए उसकी अक़्ल जाती रहे, तो वह अपने ही को मलामत करे ।

सोने और जागने की दुआ

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम जब रात को बिस्तर पर तशरीफ़ ले जाते तो अपना हाथ रूख़सार के नीचे रखते और पढ़ते, अल्लाहुम्मा बि इस्मिका अमूतु व अहिया, ऐ अल्लाह मैं तेरे नाम के साथ ही मरता और जीता हूँ यानी सोता और जागता हूँ । और जब नींद से बेदार होते तो पढ़ते, अल्हम्दु लिल्लाहिल लज़ी अहयाना बादा मा अमातना व इलैहिन्नुशूर, तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं जिसने हमें मारने के बाद ज़िन्दा किया और उसी की तरफ़ लौटकर जाना है । (बुख़ारी)

सोते वक़्त मऊज़तैन पढ़ना

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मरवी है कि नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम जब बिस्तर पर लेटते तो अपने हाथों पर फूँक मारते और कुल अऊज़ो बि रब्बिल फ़लक़ और कुल अऊजु बि रब्बिन्नास दोनों सूरतें पूरी पढ़ते और हाथों को अपने जिस्मे अतहर पर मलते थे। (इब्ने माजा)

जागने के वक़्त वज़ू करना

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि सरकारे दोआलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जब कोई बन्दा अपनी नींद से बेदार हो तो वज़ू करे और वज़ू करते वक़्त नाक में तीन बार पानी डाले क्योंकि शैतान रात नाक की जड़ में बसर करता है । (निसाई)

आदाब व मसाइल

- दिन के इब्तिदाई हिस्से में सोना या मग़रिब व इशा के दरमियान सोना मकरूह है, सोने में मुस्तहब यह है कि बा तहारत सोये, और कुछ देर दाहिनी करवट पर दाहिने हाथ को रूख़सार के नीचे रखकर क़िबला रू सोए, फिर उसके बाद बायीं करवट पर सोते वक़्त क़ब्र में सोने को याद करे कि वहाँ तनहा सोना होगा । (बहारे शरीअत)
- जब लड़के और लड़की की उम्र दस साल की हो

जाए तो उनको अलग अलग सुलाना चाहिए ।

- रात में अगर बुरा ख़्वाब देखे तो बायीं तरफ़ तीन मर्तबा थू–थू करके तीन बार अऊज़ु बिल्लाह पढ़कर करवट बदल दे और अगर अच्छा ख़्वाब देखे तो अल्लाह की हम्द करे बा वज़ू सोना सुन्नत है ।
- सोने से पहले बिस्मिल्लाह पढ़कर बिस्तर को तीन मर्तबा झाड़ लें ताकि कोई मूज़ी जानवर कीड़े मकोड़े वग़ैरह हों तो निकल जाएं ।
- बग़ैर घेर वाली छत पर न लेटें कि गिर जाने का अन्देशा है । नीज़ हदीसे पाक में ऐसी छत पर लेटने से मना फ़रमाया गया है ।
- अस्र के बाद न सोयें कि अक़्ल ज़ायल होने का ख़ौफ़ है ।
- जागते ही सबसे पहले अल्लाह तआला का नाम लें और दोनों हाथ गट्टों समेत धो लें । ज़्यादा देर तक सोना बेहतर नहीं ।
- उठने के बाद बिस्तर को लपेट कर रखें वरना सैतान इस्तेमाल करता है।

बैठने और चलने के आदाब

बैठना और चलना यह दो ऐसी चीज़ें हैं जिनसे इंसान कभी बेनियाज़ नहीं होता, बग़ैर चले फिरे, उठे बैठे, हम

कभी अपनी ज़रूरतें पूरी नहीं कर सकते । फ़ैशन के इस दौर में लोगों के चलने फिरने उठने बैठने के अन्दाज़ भी अजीब हो चुके हैं । शरीअते इसलामिया ने हमारी हर क़दम पर रहनुमाई फ़रमाई है कि हम किस तरह चलें, किस तरह बैठें । ज़ेल की सतरों में उठने बैठने और चलने फिरने के आदाब व मसाइल अहादीसे करीमा और फ़िक़ह इसलामी की रोशनी में बयान किए गये हैं ।

हदीस : हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम जब मस्जिद में बैठते तो दोनों हाथों से इहतिबा करते......इहतिबा की सूरत यह है कि आदमी सुरीन को ज़मीन पर रख दे और घुटने खड़े करके दोनों हाथों से घेर ले और एक हाथ को दूसरे हाथ से पकड़ ले, इस क़िस्म का बैठना तवाज़ोअ व इंकसार में शुमार होता है । (रज़ीन)

हदीस : हज़रत जाबिर बिन समरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम जब नमाज़े फ़ज्र पढ़ लेते तो चार ज़ानू बैठे रहते यहाँ तक कि आफ़ताब अच्छी तरह तुलूअ हो जाता । (अबू दाऊद)

हदीस : हज़रत शरीद बिन सवीद ने फ़रमाया कि हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम मेरे पास से गुज़रे तो मैं इस तरह बैठा हुआ था कि मैंने अपना

उलटा हाथ पीठ के पीछे रक्खा हुआ था और मैं हाथ की पुश्त पर टेक लगाए हुए था, तो आप सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया : क्या तुम उन लोगों की तरह बैठते हो जिन पर अल्लाह तआला का ग़ज़ब हुआ। (अबू दाऊद)

तकिया पेश करने पर मग़फ़िरत की बशारत

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है। कि मैं एक दफ़ा सरकारे दोआलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की ख़िदमते बाबरकत में हाज़िर हुआ उस वक़्त आप एक तकिया से टेक लगाये बैठे थे, आप सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने उस तकिया को मेरे सामने डाल दिया और फ़रमाया : ऐ सलमान ! अगर कोई मुसलमान अपने इसलामी भाई से मिलने जाए और वह अज़राहे ताज़ीम व मुहब्बत उसके लिए अपना तकिया पेश कर दे तो अल्लाह तआला उसकी मग़फ़िरत फ़रमा देगा । (मुस्तदरक हाकिम)

लोगों को फलाँग कर आगे बैठना

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने ऐसे शख़्स को हुज़ूर नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की ज़बान से लानती क़रार दिया है जो मजलिस में लोगों की गर्दनें फलाँग कर बीच

में बैठे ।(तिरमिज़ी)

आज यह वबा अकसर मजालिस व महाफ़िल वग़ैरह में देखने को मिलती है कि लोगों की गर्दनों को फलाँग कर और धक्का मुक्की करते हुए आगे होने की कोशिश करते हैं जिसकी वजह से पहले से बैठे हुए लोगों को अज़ीयत होती है ।

यूंही जुमा के दिन सफ़ों में लोग पहले से बैठे हुए होते हैं और बाद में आने वाले अगली सफ़ों में जाने के लिए लोगों की गर्दनें फलांगने लगते हैं,इसके मुतआलिक सख़्त वईदें आई हैं ।

जैसा कि हदीसे पाक में यह मज़मून मौजूद है कि जो लोग जुमा की नमाज़ में अगली सफ़ों में जाने के लिए लोगों की गर्दनें फलांगते हैं उनको क़यामत के रोज़ जहन्नमियों का पुल बना दिया जाएगा यानी ऐसे लोगों को क़यामत में जहन्नमी लोग रौंदते हुए गुज़रेंगे ।

लिहाज़ा हमें जहाँ जगह मिल जाए वहीं बैठ जाया करें यही सहाबा किराम का तरीक़ा रहा है जैसा कि हज़रत जाबिर बिन समरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं : जब हम हुज़ूर ताजदारे मदीना सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की ख़िदमते बाबरकत में हाज़िर होते तो हम में से जिसे जहाँ जगह मिलती बैठ जाता । (अबू दाऊद, तिरमिज़ी)

इतराकर चलना

हदीस : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया : एक शख़्स दो चादरें ओढ़े हुए इतराकर चल रहा था और घमन्ड में था, ज़मीन में धंसा दिया गया, वह क़यामत तक धंसता ही जाएगा । (बुख़ारी)

अकड़ कर चलना

हदीस : नबी करीम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : जो अपने तयीं बड़ा बनता हो और चाल में अकड़ने वाला हो, अल्लाह तआला से इस हाल मिलेगा कि वह उस पर ग़ज़बनाक होगा(मुकाशिफ़तुलकुलूब)

सरकारे दोआलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चलने की अदा

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि सरकारे दोआलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब चलते तो झुके हुए मालूम होते । (अबू दाऊद)

नीज़ एक और रिवायत हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से है कि जब सरकार सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम चलते तो ज़मीन पर क़दमे मुबारक ज़ोर के साथ

उठाते गोया कि ऊपर से नीचे की तरफ़ उतर रहे हैं।(शिमाइल तिरमिज़ी)

बैठने और चलने के आदाब व मसाइल

- सुरीन ज़मीन पर रक्खें और दोनों घुटनों को खड़ा करके दोनों हाथों से घेर लें यानी एक हाथ को दूसरे से पकड़ लें, इस तरह बैठना सुन्नत है ।
- चार ज़ानू यानी पालती मारकर बैठना भी सुन्नत है।उलटे हाथ को पीठ के पीछे करके और दायीं हाथ की हथेली की गुद्दी पर टेक लगाकर न बैठें ।
- जहाँ कुछ धूप और कुछ छाँव हो वहाँ बैठना मना है ।
- जगह हो तो रास्ते के किनारे किनारे चलें।
- दरमियाना चाल चलें, न इतना तेज़ कि लोगों की नज़रें उठें न इतना आहिस्ता कि आप मरीज़ मालूम हों ।
- लफ़ंगों की तरह गिरेबान खोलकर, अकड़ते हुए हरगिज़ न चलें कि यह शुरफ़ा की चाल नहीं बल्कि अहमक़ों और मग़रूरों की चाल है ।
- चलने में यह भी एहतियात करें कि जूते की आवाज़ पैदा न हो और राह चलते हुए बिला ज़रूरत इधर उधर न देखें ।

छींक और जमाही का बयान

हदीस : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया : अल्लाह तआला को छींक पसन्द है और जमाही नापसन्द है। जब कोई शख़्स छींके और अल्हम्दु लिल्लाह कहे तो जो मुसलमान उसको सुने उस पर यह हक़ है कि यरहमुकुल्लाह कहे, और जमाही शैतान की तरफ़ से है, जब किसी को जमाही आए तो जहाँ तक हो सके उसे दफ़अ करे, क्योंकि जब जमाही लेता है, शैतान हंसता है यानी ख़ुश होता है क्योंकि यह सुस्ती और ग़फ़लत की दलील है, ऐसी चीज़ को शैतान पसन्द करता है । (बुख़ारी)

हदीस : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया जब किसी को छींक आए तो अल्हम्दु लिल्लाह कहे, और उसका भाई या साथ वाला यरहमकुल्लाह कहे, जब यह यरहमकुल्लाह कहे तो छींकने वाला उसके जवाब में यह कहे, यहदीकुमुल्लाहु व युसलिहु बालकुम । (बुख़ारी)

हदीस : हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के पास दो शख़्सों को छींक आई, आपने एक को जवाब दिया दूसरे को नहीं दिया, उसने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह : आपने उसको जवाब दिया और मुझे नहीं दिया, आपने इरशाद

फ़रमाया, उसने अल्हम्दु लिल्लाह कहा और तूने नहीं कहा ।

हदीस : हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब किसी को जमाही आए तो मुँह पर हाथ रख ले, क्योंकि शैतान मुँह में घुस जाता है । (मुस्लिम)

हदीस : रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया जब किसी को डकार या छींक आए तो आवाज़ बुलन्द न करे कि शैतान को यह बात पसन्द है कि उनमें आवाज़ बुलन्द की जाए । (बेहिक़ी)

दुआ के वक़्त छींक आना क़ुबूलियत की दलील है।

आज कल बाज़ मुक़ामात में किसी काम के वक़्त या सफ़र वग़ैरह के इरादे से घर से निकलने के वक़्त छींक आ जाने को फ़ाले बद तसव्वुर करते हैं, जबकि यह ग़लत है, हदीसे पाक में बात चीत के वक़्त छींक आने को शाहिदे अद्ल फ़रमाया गया । इस सिलसिले में दर्जे ज़ेल अहादीस बड़ी अहम्मीयत की हामिल हैं ।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : सच्ची बात वह है कि उस वक़्त छींक आ जाए । (तिबरानी) और हकीम की रिवायत हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से यह है कि जब को बात की जाए और

छींक आ जाए तो वह हक़ है, और अबू नईम की रिवायत उन्हीं से है कि दुआ के वक़्त छींक आ जाना सच्चा गवाह है ।

छींक से मुताल्लिक अहम वाक़्या

हज़रत सैयदना अबू दाऊद रहमतुल्लाह अलैह एक बार दरया के किनारे किनारे तशरीफ़ ले जा रहे थे क़रीब ही एक कश्ती का गुज़र हुआ जिसमें काफ़ी लोग सवार थे, अचानक किसी को छींक आई और उसने अल्हम्दु लिल्लाह कहा, कश्ती तेज़ी से गुज़र गई, हज़रत अबू दाऊद बेताब हो गए, इधर उधर नज़र दौड़ाई तो क़रीब ही एक ख़ाली कश्ती पर नज़र पड़ी, आपने उसके मल्लाह से फ़रमाया : मुझे उस कश्ती के पीछे जाना है क्या किराया लोगे । उसने दो दीनार किराया बताया, आपने मन्ज़ूर फ़रमा लिया और कश्ती में सवार हो गए, अब आपकी कश्ती तेज़ी के साथ उस कश्ती के तअक़्क़ुब में आगे बढ़ने लगी, जैसे ही आप की कश्ती उस कश्ती के क़रीब पहुँची आपने छींक का जवाब देते हुए बुलन्द आवाज़ में फ़रमाया, यरहमकुल्लाह, कश्ती के अन्दर से जवाब दर जवाब आया, यहदीकुमुल्लाहु व युसलिहु बालिकुम, अब आपने कश्ती के मल्लाह से फ़रमाया, मेरा काम हो चुका है, अब मुझे वापस किनारे पर ले चलो, मल्लाह ने मुताज्जिब होकर अर्ज़ किया, क्या आपने सिर्फ़ छींक का जवाब देने के लिए दो

दीनार ख़र्च किया है, आपने इरशाद फ़रमाया : हाँ ! बिलआख़िर किराया अदा करके आप जैसे ही किनारे पर तशरीफ़ लाए हातिफ़े ग़ैब से आवाज़ आई.............ऐ अबू दाऊद ! तुमने दो दीनार के बदले जन्नत ख़रीद ली ।

अहकाम व मसाइल

- छींक का जवाब एक मर्तबा वाजिब है । दोबारा छींक आई और उसने अल्हम्दु लिल्लाह कहा तो दोबारा जवाब वाजिब नहीं बल्कि मुस्तहब है । (आलमगीरी)
- जिसको छींक आई वह यह कहे अल्हम्दु ल्लिाहि रब्बिल आलमीन, या अल्हम्दु लिल्लाहि अला कुल्लि हाल, और उसके जवाब में दूसरा शख़्स यूँ कहे, यरहमकुल्लाह फिर छींकने वाला यह कहे, यग़फ़िरूल्लाहु लना व लकुम या यह कहे, यहदीकुमुल्लाहु व युसलिहु बालिकुम, इसके सिवा दूसरी बात न कहे । (आलमगीरी)
- छींक के वक़्त सर झुका ले और मुँह छुपा ले और आवाज़ को पस्त करे, छींक की आवाज़ बुलन्द करना हिमाक़त है ।
- औरत को छींक आई अगर वह बूढ़ी है तो मर्द उसका जवाब दे, अगर जवान है तो इस तरह जवाब दे कि वह न सुने, मर्द को छींक आई और औरत ने जवाब दिया, अगर जवान है तो मर्द उसका जवाब दिल में दे

और बूढ़ी है तो मर्द उसका जबाव दे अगर जवान है तो इस तरह जबाव दे के वह न सुने मर्द को छींक आई और औरत ने जबाव दिया अगर जवान है तो मर्द उसका जबाव दिल में दे और बूढ़ी है तो ज़ोर से जबाव दे सकता है।(आलमगीरी)

- एक मजलिस में किसी को कई मरतवा छींक आई तो सिर्फ तीन बार तक जबाव देना है उसके बाद इख्तियार है कि चाहे जबाव दे या न दे।
- खुतबाह के वक्त किसी को छींक आये तो उसका जवाब न दें (बहारे शरीअत)
- छींकने वाला दीवार के पिछे हो जब भी जवाब दें कई लोग मोजूद हों तो वाज़ हाज़रीन ने जवाब दे दिया तो सबकी तरफ से जवाब हो गया,मगर बहतर यही है कि सारे जवाब दें।
- जब जमाई आने लगे तो उपर के दातों से निचले होंठ को दवाएं या उलटे हाथं की पीठ मुह पर रखें, जमाही रोकने का एक तरीका ये भी है कि जब आना सुरु हो फौरन दिल मे ख्याल करें के अम्विया अलैहि मुस्सलाम को जमाही कभी नही आई इन्साह अल्लाह जमाही फौरन रुक जायेगी।